卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

स्तोत्र संग्रह

१-महावीराष्टक-स्तोत्रम्

(भावार्थ सहित)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः ।
समं भांति ध्रौव्य-व्यय-जनिलसंतोऽन्त रहिताः
जगत्साक्षी मार्ग प्रकटनपरो भानुरिव यो ।
महावीर स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ॥ १ ॥

अर्थ :-- जिनके केवल ज्ञान में ध्रौव्य-व्यय और उत्पत्ति सहित अनन्त चेतन और अचेतन पदार्थ दर्पण के समान एक साथ प्रति-भासित होते है जो संसार को प्रत्यक्ष करने वाले सूर्य के समान मुक्ति का मार्ग बतलाने वाले है ऐसे श्री महावीर प्रभु मेरे सदैव दृष्टिगोचर रहें अर्थात् मै सदा उस वीतराग-शान्त मुद्रा का अवलोकन किया करूँ ।

अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्दरहितं ।
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि ॥
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति-विमला ।
महावीर-स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे ।

अर्थः-- जिन महावीर प्रभु के नेत्र रूपी कमलों का युगल लालिमा रहित और टिमकार से रहित है जो कि मनुष्यों को अंतरग की क्षमा को प्रकट करता है तथा जिनकी शरीर की आकृति प्रकट रूप में भी अति-शान्त व स्वच्छ है ऐसे श्री वीर प्रभु मेरे नेत्र रूपी मार्ग में विचरण करने वाले हों अर्थात आंखो से ओझल न होने दूं ।

नमन्नाकेन्द्राली मुकुट मणि भाजाल जटिलं ।
लसत्पादाम्भोज द्वयमिह यदीयं तनुभृताम् ।
भवज्ज्वालाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि ।
महावीर स्वामी नयन पथगामी भवतु से ॥३॥

अर्थ :-- नमस्कार करती हुई इन्द्रों की पंक्ति के मुकुटों की मणियों के प्रकाश पुंज से व्याप्त जिनका शोभायमान चरण कमलों का युगल है और इस संसार में जिनका स्मरण भी प्राणियों के संसारातप की शान्ति के लिए जल - स्वरूप होता है । ऐसे महावीर भगवान् मेरे नेत्र रूपी मार्ग में विचरण करने वाले हों ।

यदर्च्चा भावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह ।
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुखनिधिः ।
लभंते सद्भक्ताः शिवसुख-समाजं किमु-तदा ।
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ॥४॥

अर्थ :-- इस लोक में जिनकी पूजा करने के भाव से प्रसन्नचित हुआ मेंढक गुणों के समुह से युक्त सुख का भण्डार उसी क्षण शुद्ध भावों से वृद्धि का धारक देव हुआ । यदि सच्चे भक्त लोग मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं तो उसमें आश्चर्य क्या है ? ऐसे वे वीर स्वामी मेरे नेत्र रूपी मार्ग में विचरण करने वाले हों ।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत तनुर्ज्ञान निवहो ।
विचित्रात्माप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनयः ।
अजन्मापि श्रीमान् विगत भवरागोद्भुतगतिः ।
महावीर स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ॥५॥

अर्थः-- आप दैदीप्यमान सोने के समान कांति के धारक होकर भी शरीर रहित ज्ञान के पुंज, अनेक स्वभाव वाले होकर भी मात्र एक राजाओं में श्रेष्ठ महाराजा सिद्धार्थ के पुत्र होते हुए भी, जन्म रहित और लक्ष्मी वाले होकर भी विशेष रूप से बीत गया है जन्म-मरण का राग जिनके ऐसे अद्भुत अवस्था वाले वीर जिन मेरे नेत्र रूपी मार्ग मैं विचरण करने वाले हों ।

यदीया वाग्गंगा विविध-नय कल्लोल-विमला ।
वृहज्ज्ञानाम्भोभि-र्जगति जनतां या स्नपयति ॥
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता ।
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ॥६॥

अर्थ :-- हे महावीर जिनेंश! आपकी दिव्य देशनारूपी गंगा नदी नाना प्रकार की नय रूपी लहरों से निर्मल है तथा जो संसार में समस्त जीवों को द्वादशाँग शास्त्रों के ज्ञान रूपी जल से स्नान कराकर

हृदय से भी पवित्र बनाती है
गंगा नदी का आजकल भी
है अर्थात् इस कलिकाल में
पठन-पाठन होता है । ऐसी
हमेशा मेरे नयन रूपी मार्ग

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-
कुमारा वस्थायामपि निज
स्फुरन्नित्यानन्द प्रशम-प
महावीर-स्वामी नयन-प

अर्थ :-- जिनके द्वारा अपने आत्मबल
वेग जिसका तीनों लोकों को
लिया था । ऐसे जिनेन्द्र वीर
रूपी साम्राज्य की प्राप्ति के
करने वाले हों ।

महामोहातंक-प्रशमन-प
निरापेक्षो बंधुर्विदित-महि
शरणयः साधूनाम् भव-
महावीर-स्वामी नयन पथ

अर्थ :-- आप महान् मोह रूपी रोग को
उत्तम व अचानक प्राप्त हो जा
भला करने वाले भाई हैं । प्र
है । जन्म मरण के दुःखों से
और उत्तम गुणों के भंडार है
प्रभु हमेशा मेरी आंखों के
प्रभु हमेशा मेरी आंखों के सा
लगाकर आपकी वीतराग मूर्ति

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स

अर्थ :-- जो भव्य प्राणी आपके इस भ
हुए महावीराष्टक नाम वाले
सुनता है वह अवश्य ही मोक्ष

और इस आपका दिव्य वाणी रूपी
धजन रूपी हंसों ने आश्रय ले रखा
भी जिनवाणी माता का सर्वत्र
दव्यवाणी में अलंकृत श्री वीर जिन
विचरण करते रहें ।

यी काम-सुभटः ।
-बलाद्येन विजितः ।
द-राज्याय स जिनः ।
गामी भवतु मे ॥७॥

से कुमार अवस्था में ही दुर्निवार है
जीतने वाला कामरूपी योद्धा जीत
भु दैदीप्यमान व नित्य आनन्दमयी
ए मेरे नेत्रों रूपी मार्ग में विचरण

कस्मिक-भिषक् ।
मा - मंगलकरः ॥
य-भूतामुत्तम-गुणो ।
गामी भवतु मे ॥८॥

पूर्ण रीति से शाँत करने के लिए
ने वाले वैद्य है स्वार्थ रहित सबका
सिद्ध महिमा वाले कल्याण कारक
बराये हुये प्राणियों के आधार है ।
से उपयुक्त गुणों से युक्त श्री वीर
ामने विद्यमान रहें अर्थात् श्री वीर
मने विद्यमान रहें अर्थात् मै टकटकी
का अवलोकन किया करूँ ।

त्या भागेन्दुना कृतम् ।
याति परमां गतिम् ॥९॥

क्तिपूर्वक भागचन्द के द्वारा बनाये
स्तोत्र को नियम से पढ़ता है और
स्थान को प्राप्त करता है ।